Inspira-Journal of Commerce, Economics & Computer Science (JCECS)
(A National bi-lingual Quarterly Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal)
ISSN : 2395-7069(Print), Impact Factor: (Cosmos 7.650 & I2OR 5.120), Volume 12, No. 04, October-December, 2026, pp. 125-136

# बिहार में विनिर्माण उद्यमिता: समस्याएँ एवं संभावनाएँ (गया जिले के विशेष संदर्भ में)

**राहुल कुमार[1*] एवं डॉ. अनामिका भगत[2]**

[1]शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार।
[2]सहायक प्राध्यापिका, अर्थशास्त्र विभाग, अनुग्रह मेमोरियल कॉलेज, गया, बिहार।

[*]Corresponding Author: rk4990025@gmail.com

***Citation***: *कुमार, राहुल एवं भगत, अनामिका (2026). बिहार में विनिर्माण उद्यमिता: समस्याएँ एवं संभावनाएँ (गया जिले के विशेष संदर्भ में). Journal of Commerce, Economics & Computer Science, 12(04), 125–136.*

***सार***

*बिहार में विनिर्माण का आधार ऐतिहासिक रूप से कमज़ोर रहा है, पर हाल के वर्षों में इसमें सुधार के संकेत मिले हैं। यह आलेख द्वितीयक आँकड़ों, प्रकाशित अध्ययनों और सरकारी परियोजना–दस्तावेज़ों के आधार पर बिहार में विनिर्माण उद्यमिता की समस्याओं और संभावनाओं का विश्लेषण करता है और गया जिले को विशेष संदर्भ के रूप में लेता है। वर्ष 2023–24 में बिहार में 3,386 पंजीकृत कारख़ाने थे, जो देश के कुल कारख़ानों का लगभग 1.3 प्रतिशत है। इसी बीच राज्य के सकल मूल्य वर्धन में द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा 2020–21 के 21. 1 प्रतिशत से बढ़कर 2024–25 में 26.8 प्रतिशत हो गया। साहित्य के अनुसार वित्त, कच्चा माल, बिजली, विपणन, प्रशासनिक प्रक्रिया, कौशल और औद्योगिक रुग्णता प्रमुख समस्याएँ हैं। संभावनाओं के रूप में गया का 1,670 एकड़ का समन्वित विनिर्माण क्लस्टर, बिहार औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन पैकेज 2025 तथा तिलकुट, अगरबत्ती और पत्थर–शिल्प जैसे स्थानीय क्लस्टर उभरते हैं। निष्कर्ष यह है कि अवसर बढ़े हैं, पर उनका लाभ स्थानीय उद्यमियों तक तभी पहुँचेगा जब वित्त, प्रशासनिक सरलता, कौशल और बाज़ार संपर्क पर साथ–साथ काम हो।*

***शब्दकोश:*** *विनिर्माण उद्यमिता, बिहार, गया, सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम, औद्योगिक क्लस्टर, औद्योगिक नीति।*

## प्रस्तावना

किसी क्षेत्र में उत्पादन, रोज़गार और आय का स्थायी विस्तार इस पर निर्भर करता है कि वहाँ के उद्यमी कच्चे माल, श्रम और पूँजी को मूल्यवर्धित उत्पादों में कितनी कुशलता से बदल पाते हैं। इसी कारण विनिर्माण उद्यमिता नीति–निर्माताओं और शोधकर्ताओं, दोनों के लिए महत्वपूर्ण रही है। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) के अनुसार भारत में विनिर्माण में लगे कामगारों का हिस्सा 2024 में 11.6 प्रतिशत और 2025 में 12.1 प्रतिशत रहा (11), यानी अधिकांश कार्यबल अब भी कृषि और सेवाओं में लगा है।

बिहार में यह चुनौती और गहरी रही है। एक पुराने विश्लेषण के अनुसार वर्ष 2000 में झारखंड के अलग होने के बाद खनिज–आधारित उद्योग राज्य से बाहर चले गए और बिहार के पास खाद्य, तंबाकू, चमड़ा

*Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

तथा गैर–धात्विक खनिज उत्पादों का संकरा औद्योगिक आधार बचा (3)। उसी विश्लेषण में उस समय उद्योग का हिस्सा राज्य घरेलू उत्पाद में केवल 3.2 प्रतिशत बताया गया था (3)। आर्थिक सर्वेक्षण 2025–26 की रिपोर्टिंग के अनुसार 2024–25 में द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा सकल राज्य मूल्य वर्धन में 26.8 प्रतिशत हो गया (8)। दोनों आँकड़े अलग आधार–वर्ष और परिभाषा पर आधारित हैं, इसलिए उन्हें सीधे जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए, फिर भी दिशा का बदलाव स्पष्ट है।

गया जिला इस बदलाव के केंद्र में है। यहाँ तिलकुट, अगरबत्ती, पत्थर–शिल्प और काष्ठ–शिल्प जैसे पारंपरिक क्लस्टर हैं (18), और डोभी में 1,670 एकड़ का समन्वित विनिर्माण क्लस्टर (IMC) विकसित किया जा रहा है (14)। इस पृष्ठभूमि में यह आलेख दो प्रश्न उठाता है:

- बिहार के विनिर्माण उद्यमियों के सामने प्रमुख समस्याएँ क्या हैं?
- गया के संदर्भ में कौन–सी संभावनाएँ ठोस आधार रखती हैं?

आलेख की संरचना इस प्रकार है: खंड 2 में साहित्य समीक्षा, खंड 3 में उद्देश्य और पद्धति, खंड 4 में वर्तमान स्थिति, खंड 5 में समस्याएँ, खंड 6 में संभावनाएँ तथा खंड 7 में निष्कर्ष और सुझाव।

## साहित्य समीक्षा एवं शोध–रिक्ति

क्लस्टर और उद्यमिता। पोर्टर (1998) ने क्लस्टर को परस्पर जुड़ी कंपनियों और संस्थाओं की भौगोलिक सघनता के रूप में प्रस्तुत किया और प्रतिस्पर्धा के विश्लेषण में उसे केंद्र में रखा (5)। भारत में ओकादा और सिद्धार्थन (2007) ने चेन्नई और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के ऑटोमोबाइल क्लस्टरों का अध्ययन किया और पाया कि क्लस्टर का हिस्सा होना ऑटो–पुर्ज़ा कंपनियों के प्रदर्शन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है (6)।

बिहार के उद्यमों की बाधाएँ। प्रकाश, कुमार और वर्मा (2021) ने बिहार के 450 उद्यमियों का बहुस्तरीय नमूना लेकर बारह प्रमुख बाधाएँ पहचानीं। इनमें कच्चे माल की उपलब्धता, वित्तीय कठिनाइयाँ, श्रम की समस्या, कमज़ोर प्रौद्योगिकी, बिजली की कमी, खराब विपणन, प्रतिस्पर्धा, ज्ञान का अभाव, सरकारी एवं प्रशासनिक समस्याएँ और अपर्याप्त आधारभूत संरचना शामिल हैं; लेखकों ने सुशासन को मुख्य समाधान बताया (1)। प्रकाश (2020) के शोध–प्रबंध में नौ जिलों के 450 उद्यमों के सर्वेक्षण से औद्योगिक रुग्णता के 27 प्रमुख कारक पहचाने गए (2)।

औद्योगिक संरचना और नीति। 'क्या बिहार औद्योगीकृत हो सकता है?' शीर्षक का विश्लेषण राज्य की औद्योगिक कमज़ोरी को उपनिवेशकालीन भू–व्यवस्था, राष्ट्रीय नीतियों और संरचनात्मक कमियों से जोड़ता है (3)। खाद्य प्रसंस्करण पर IGC की 2017 की रिपोर्ट पर आधारित एक लेख के अनुसार 2008 से 2016 के बीच 35 प्रतिशत पूँजी अनुदान से लगभग 400 नई इकाइयाँ लगीं, जिनमें करीब 48,319 लोगों को रोज़गार मिला। साथ ही अनुदान ने कम जोखिम उठाने वाले गैर–उद्यमियों को आकर्षित किया, और वित्त, भूमि, नौकरशाही तथा बिजली की गुणवत्ता प्रमुख बाधाएँ रहीं (4)। वही लेख मध्यम आकार की इकाइयों की कमी (उपेपदह उपककसम) की ओर भी संकेत करता है (4)।

बिहार के MSME और वित्त। सिंह और कुमार (IIBF की शोध–रिपोर्ट) ने बिहार के 100 MSME उत्तरदाताओं और 50 बैंक अधिकारियों के सर्वेक्षण से वित्त की समस्या देखी। उनके अनुसार बिहार देश के पंजीकृत MSME का लगभग 5 प्रतिशत है और जनसंख्या में उसका हिस्सा 8.6 प्रतिशत है, जबकि बैंकों की शाखाओं में हिस्सा 4.8 प्रतिशत है। उनके नमूने में 72 ऋणों की मंजूरी में दो महीने से अधिक लगे और 17 कभी मंजूर नहीं हुए (21)। कुमार (2018) बिहार के MSME की समस्याओं में अपर्याप्त ऋण, ज़मानत की शर्तें, ऋण–मंजूरी में देरी, खरीदारों से भुगतान में देरी, कमज़ोर आधारभूत संरचना, कुशल श्रमिकों की कमी तथा कम तकनीक गिनाते हैं (23)।

हालिया द्वितीयक अध्ययन। राज, कुमार, श्रीवास्तव और कुमार (2025) ने 2000 से 2023 के द्वितीयक आँकड़ों से पाया कि बिहार में MSME इकाइयाँ लगभग 1.5 लाख से बढ़कर 9.8 लाख हुईं, पर प्रति इकाई निवेश और रोज़गार कम बने रहे; गतिविधि पटना, मुज़फ़्फ़रपुर, भागलपुर और गया में केंद्रित बताई गई है। लेखकों ने स्वयं माना है कि कुछ आँकड़े रैखिक अनुमान पर आधारित हैं (22)। इस आलेख में इन अध्ययनों को केवल संकेत माना गया है, निर्णायक प्रमाण नहीं।

शोध–रिक्ति। उपलब्ध अध्ययन या तो राज्य–स्तर पर हैं या किसी एक उप–क्षेत्र पर केंद्रित हैं। इस आलेख के लेखक द्वारा देखे गए स्रोतों में ऐसा कोई अध्ययन नहीं मिला जो गया जिले के संदर्भ में विनिर्माण उद्यमिता की समस्याओं और संभावनाओं को, नई औद्योगिक परियोजनाओं के साथ जोड़कर, एक साथ देखता हो। यह आलेख इसी रिक्ति को द्वितीयक स्रोतों के आधार पर भरने का प्रयास है।

## उद्देश्य एवं शोध–पद्धति

### उद्देश्य

- बिहार में विनिर्माण क्षेत्र की वर्तमान स्थिति को उपलब्ध संकेतकों के आधार पर समझना।
- विनिर्माण उद्यमियों की प्रमुख समस्याओं को साहित्य और आँकड़ों के आधार पर वर्गीकृत करना।
- गया जिले के संदर्भ में उपलब्ध संभावनाओं की पहचान करना।
- नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

पद्धति। यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है और पूरी तरह द्वितीयक सामग्री पर आधारित है। इसमें प्रकाशित शोध, सरकारी परियोजना–दस्तावेज़, संसदीय उत्तर और समाचार–रिपोर्टों में उद्धृत सरकारी आँकड़ों का उपयोग किया गया है। प्रत्येक आँकड़े के साथ उसका स्रोत और वर्ष दिया गया है।

| स्रोत | उपयोग किया गया आँकड़ा | वर्ष |
|---|---|---|
| वार्षिक उद्योग सर्वेक्षण (ASI), पटना प्रेस की रिपोर्ट के माध्यम से [7] | पंजीकृत कारख़ानों की संख्या | 2023-24 |
| बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26, समाचार-रिपोर्ट के माध्यम से [8] | राज्य घरेलू उत्पाद, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा | 2024-25 |
| उद्योग विभाग के हवाले से समाचार-रिपोर्ट [9] | उद्यम पोर्टल पर पंजीकृत उद्यम और रोज़गार | 2026 |
| राज्य स्तरीय बैंकर्स बैठक की रिपोर्ट [10] | ऋण-जमा अनुपात | 2025-26 |
| PLFS वार्षिक रिपोर्ट, PIB [11] | विनिर्माण में कार्यबल का अखिल भारतीय हिस्सा | 2024, 2025 |
| NICDC, BIADA, लोकसभा उत्तर [14][15][16] | समन्वित विनिर्माण क्लस्टर, गया | 2023-2026 |
| BIIPP 2025 से संबंधित रिपोर्टें [12][13] | राज्य की प्रोत्साहन नीति | 2025-26 |

सीमाएँ। कई आँकड़े मूल रिपोर्ट के बजाय उनके हवाले से छपी रिपोर्टों के माध्यम से लिए गए हैं। गया का जिला–स्तरीय आँकड़ा MSME–DI पटना की संक्षिप्त औद्योगिक प्रोफ़ाइल (26) से लिया गया है, जो 2011–12 तक का है; इसलिए वह वर्तमान स्थिति नहीं, पिछला आधार–बिंदु दिखाता है, और IMC जैसी नई परियोजनाओं का विश्लेषण परियोजना–दस्तावेज़ों पर आधारित है। आँकड़ों के वर्ष अलग–अलग हैं, और देश के कारख़ानों में बिहार का लगभग 1.3 प्रतिशत हिस्सा लेखक की अपनी गणना है (3,386 को 2,60,061 से भाग देने पर)।

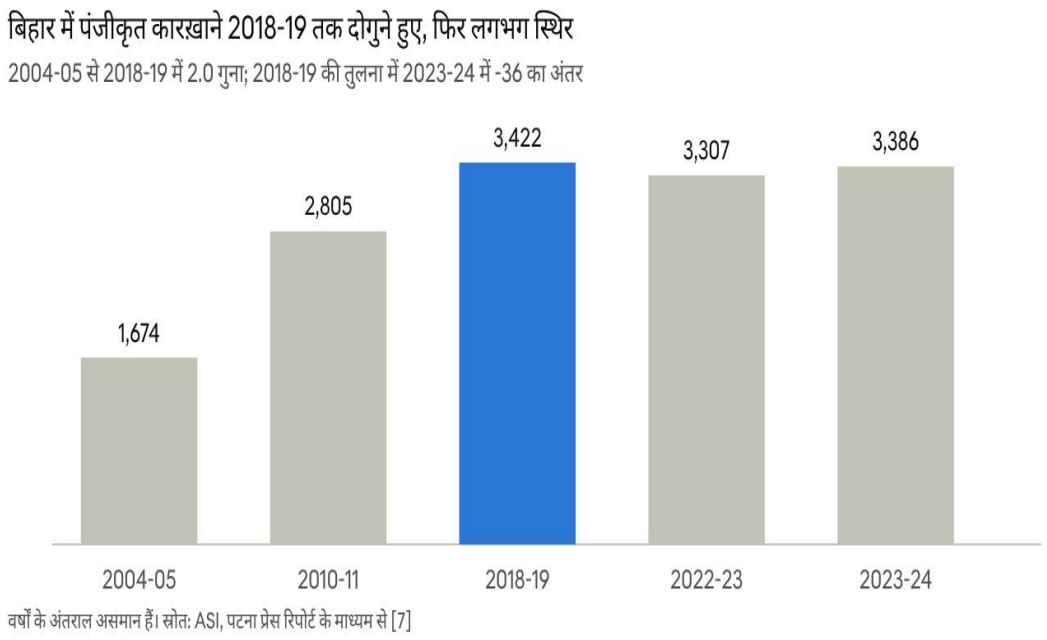
शोध–स्रोतों की सीमा। IIBF की रिपोर्ट का नमूना केवल 100 MSME और 50 बैंक अधिकारियों का है (21); राज आदि (2025) के कुछ आँकड़े स्वयं लेखकों के अनुसार रैखिक अनुमान पर आधारित हैं (22); कुमार

(2018) में नमूने का आकार नहीं बताया गया (23); और SDG–9 अध्ययन के लेखक पृष्ठ पर स्पष्ट नहीं हैं (24)। इसलिए इनसे निकले निष्कर्ष संकेतात्मक हैं। गया की संक्षिप्त औद्योगिक प्रोफ़ाइल में कई मदें (निर्यात, विकास–प्रवृत्ति, बिक्री) 'उपलब्ध नहीं' दर्ज हैं और उसके आँकड़े 2011–12 तक के हैं (26)।

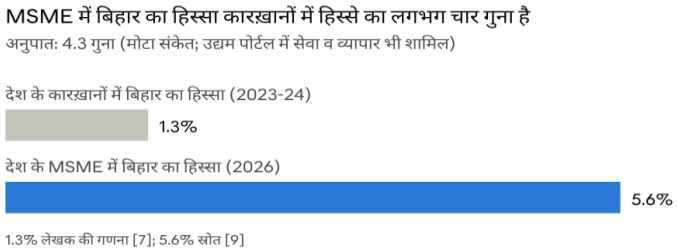
## बिहार में विनिर्माण उद्यमिता की वर्तमान स्थिति

बिहार में उद्यम बड़ी संख्या में हैं, पर पंजीकृत कारख़ाने कम हैं: उद्यम पोर्टल पर 54.19 लाख MSME दर्ज हैं (देश के MSME का लगभग 5.6 प्रतिशत), जबकि 2023–24 में पंजीकृत कारख़ाने केवल 3,386 थे, जो देश के कारख़ानों का लगभग 1.3 प्रतिशत है (7)(9)।

| संकेतक | आँकड़ा | वर्ष | स्रोत |
|---|---|---|---|
| पंजीकृत कारख़ाने (ASI) | 3,386 (पिछले वर्ष के 3,307 से लगभग 2.4% अधिक); देश में कुल 2,60,061; बिहार का क्रम 15वाँ | 2023-24 | [7] |
| कारख़ानों की प्रवृत्ति | 1,674 (2004-05) → 2,805 (2010-11) → 3,422 (2018-19) → 3,307 (2022-23) → 3,386 (2023-24) | 2004-05 से 2023-24 | [7] |
| देश के कारख़ानों में बिहार का हिस्सा | लगभग 1.3% (लेखक की गणना) | 2023-24 | [7] |
| राज्य का सकल घरेलू उत्पाद | ₹9,91,997 करोड़; वृद्धि 13.1% (चालू भाव), 8.6% (स्थिर भाव) | 2024-25 | [8] |
| द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा (सकल राज्य मूल्य वर्धन में) | 26.8% (2020-21 में 21.1%); द्वितीयक क्षेत्र की वृद्धि 11.1% (स्थिर भाव) | 2024-25 | [8] |
| उद्यम पोर्टल पर MSME | 54.19 लाख; दर्ज रोज़गार 2 करोड़; देश के MSME में लगभग 5.6% | 2026 | [9] |
| ऋण-जमा अनुपात | 60.21% (पहली बार 60% के पार; 2018-19 में 44.09%) | 2025-26 | [10] |



## ASI आँकड़े, पटना प्रेस रिपोर्ट (7) से

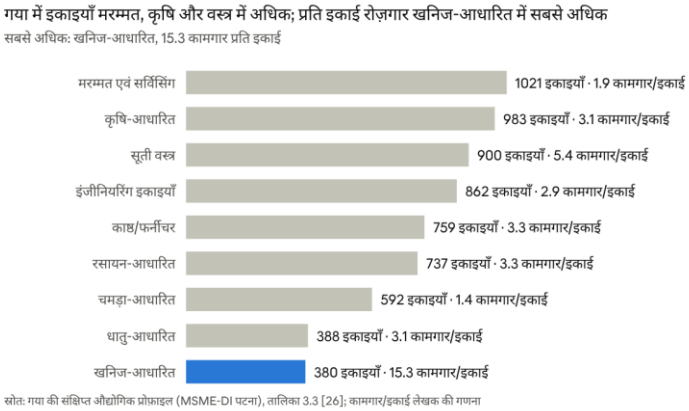



स्रोत (7), (9); अनुपात लेखक की गणना

गया की स्थिति। उद्यम पंजीकरण रिपोर्ट (बुलेटिन VII) के अनुसार 30 सितंबर 2021 तक गया में 8,436 उद्यम पंजीकृत थेः सूक्ष्म 8,298, लघु 126 और मध्यम 12 (19)। यानी लगभग 98.4 प्रतिशत इकाइयाँ सूक्ष्म हैं (लेखक की गणनाः 8,298 ÷ 8,436), जबकि मध्यम इकाइयाँ लगभग 0.14 प्रतिशत ही हैं। यह वही 'मध्यम इकाइयों की कमी' वाला ढाँचा है जिसकी ओर साहित्य संकेत करता है (4)। यह रिपोर्ट आकांक्षी जिलों के आँकड़े देती है और उसमें सभी प्रकार के उद्यम शामिल हैं, केवल विनिर्माण नहीं; इसलिए इसे विनिर्माण–विशिष्ट तस्वीर नहीं माना जाना चाहिए।

अतिरिक्त संकेत (2025)। यूथपावर इंडिया के जिला–पन्ने के अनुसार गया के पंजीकृत उद्यमों में लगभग 29 प्रतिशत विनिर्माण में और 71 प्रतिशत सेवा में हैं, तथा छोटे व मध्यम उद्यमों में रोज़गार का हिस्सा केवल 3 प्रतिशत है (आँकड़ा वर्ष 2025 का, लेखक द्वारा जानकारी के अनुसार; पोर्टल 20 अक्तूबर 2026 को देखा गया) (20)। सावधानीः यह एक गैर–सरकारी पोर्टल का आँकड़ा है; पोर्टल ने न मूल रजिस्टर बताया है और न आँकड़े का वर्ष, इसलिए इसे केवल संकेत माना गया है, पक्का तथ्य नहीं।

गया की औद्योगिक संरचनाः जिला औद्योगिक प्रोफ़ाइल से। MSME–DI पटना की गया संबंधी संक्षिप्त औद्योगिक प्रोफ़ाइल (26) के अनुसार जिले में 7,572 पंजीकृत उद्योग इकाइयाँ थीं, जिनमें 28,531 लोगों को रोज़गार और ₹12,595.79 लाख का निवेश दर्ज था; कुल औद्योगिक इकाइयाँ लगभग 18,000 आँकी गई थीं। यानी पंजीकृत इकाइयाँ कुल का लगभग 42 प्रतिशत थीं (लेखक की गणना), बाकी अपंजीकृत थीं। जिले में कोई बड़ा या सार्वजनिक उपक्रम नहीं बताया गया है और केवल 3 मध्यम या बड़ी इकाइयाँ पंजीकृत थीं (26)। आँकड़े 2011–12 तक के हैं, इसलिए वे वर्तमान स्थिति नहीं, बल्कि पिछला आधार–बिंदु दिखाते हैं।

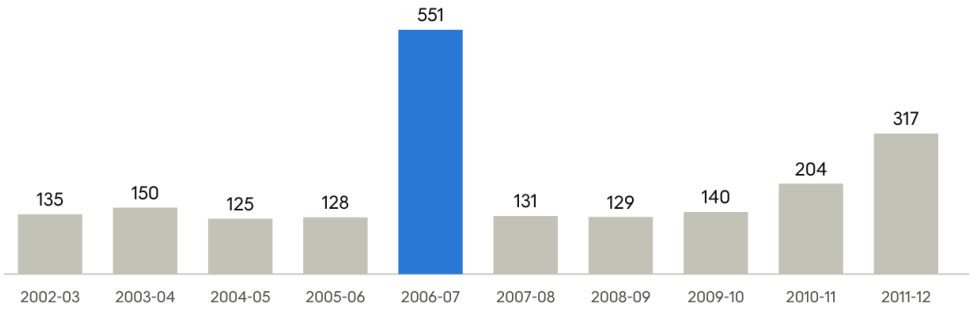


**गया की संक्षिप्त औद्योगिक प्रोफ़ाइल, तालिका 3.3 (26); प्रति इकाई कामगार लेखक की गणना**

चार्ट से तीन बातें निकलती हैं (सभी लेखक की गणना पर आधारित)। पहली, इकाइयों की संख्या मरम्मत–सेवा (13.5%), कृषि–आधारित (13.0%) और सूती वस्त्र (11.9%) में सबसे अधिक है। दूसरी, पंजीकृत इकाई पर औसत रोज़गार केवल 3.8 कामगार (28,531 ÷ 7,572) और औसत निवेश लगभग ₹1.66 लाख प्रति इकाई था, जो बहुत छोटे पैमाने का संकेत है। तीसरी, खनिज–आधारित इकाइयाँ केवल 5.0% थीं, पर पंजीकृत रोज़गार में उनका हिस्सा 20.4% था; प्रति इकाई औसत 15.3 कामगार, जबकि चमड़ा–आधारित इकाइयों में 1. 4। यह आँकड़ा बताता है कि गया में इकाइयों की संख्या और रोज़गार–क्षमता अलग चीज़ें हैं; नीति–सहायता केवल संख्या के आधार पर नहीं, रोज़गार–सघन क्षेत्रों को ध्यान में रखकर तय होनी चाहिए।

गया में वार्षिक नए पंजीकरण 2006-07 में एक बार उछले, 2010-12 में फिर बढ़े

2006-07 को छोड़कर औसत 162 इकाइयाँ प्रति वर्ष



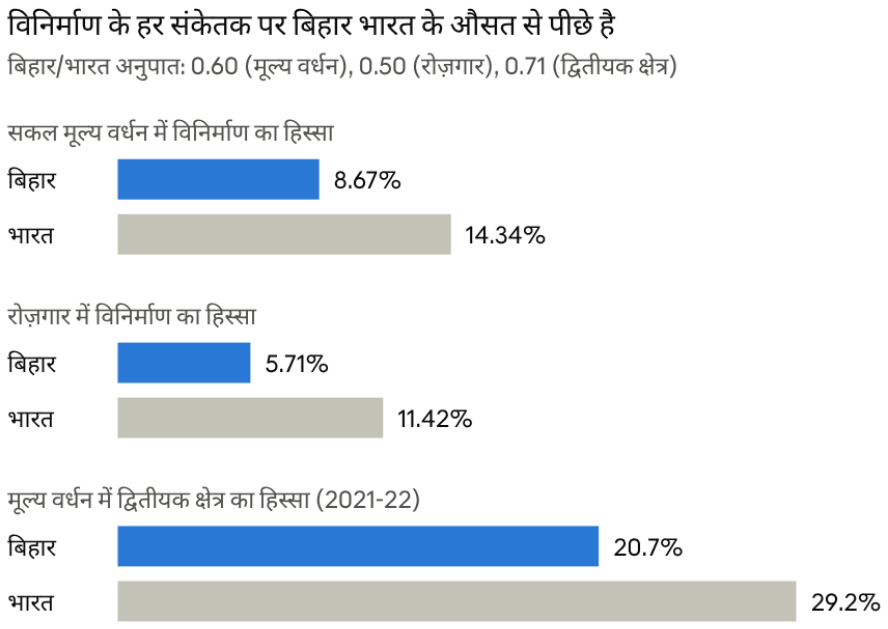

स्रोत: DIC गया व MSME-DI पटना, तालिका 3.2 [26]; 1984-2002 की 5,562 इकाइयाँ इसमें शामिल नहीं

**गया की संक्षिप्त औद्योगिक प्रोफ़ाइल, तालिका 3.2 (26)**

पंजीकरण का वार्षिक क्रम भी ध्यान देने योग्य है। 1984 से 2002 तक की 5,562 इकाइयाँ कुल 7,572 का लगभग 73 प्रतिशत हैं (लेखक की गणना), यानी 2002 के बाद नए पंजीकरण अपेक्षाकृत कम रहे। 2006–07 में 551 पंजीकरण असामान्य रूप से अधिक हैं, जिसका कारण प्रोफ़ाइल में नहीं बताया गया है, इसलिए इस पर कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। 2010–11 (204) और 2011–12 (317) में पंजीकरण बढ़े हैं (26)।

प्रोफ़ाइल में दर्ज बाधाएँ। प्रोफ़ाइल के अनुसार जिले में कोई पंजीकृत उद्योग संघ नहीं है, और उद्योग मुख्यतः बिजली की कमी, बैंकों से ऋण की सुविधा, निर्यात–विपणन के ज्ञान की कमी, बाज़ार–संपर्क की कमी और गुणवत्ता सुधारने वाली नवीनतम तकनीक की कमी से प्रभावित हैं (26)। ये वही बाधाएँ हैं जो खंड 5 में राज्य–स्तरीय साहित्य से निकली थीं (1)(4); इस तरह जिला–स्तर का साक्ष्य राज्य–स्तरीय निष्कर्षों से मेल खाता है।

इन आँकड़ों से दो बातें निकलती हैं। पहली, द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा बढ़ा है और पंजीकृत कारख़ानों की संख्या 2018–19 के बाद लगभग स्थिर रही है, यानी वृद्धि मुख्यतः कारख़ानों की संख्या से नहीं, अन्य कारणों से आई लगती है; यह अनुमान है, जिसकी पुष्टि के लिए क्षेत्रवार आँकड़े चाहिए। दूसरी, डैडम में बिहार का हिस्सा (लगभग 5.6%) कारख़ानों में उसके हिस्से (लगभग 1.3%) से बहुत अधिक है, जो छोटे और अपंजीकृ त पैमाने के उद्यमों की प्रधानता की ओर संकेत करता है। उद्यम पोर्टल में सेवा और व्यापार उद्यम भी आते हैं, इसलिए यह तुलना केवल मोटा संकेत है।




स्रोत: SDG India Report 2023-24 के आँकड़े, SDG-9 अध्ययन [24] के माध्यम से; अनुपात लेखक की गणना

**SDG–9 अध्ययन (24) में उद्धृत SDG इंडिया रिपोर्ट 2023–24 के आँकड़े; अनुपात लेखक की गणना**

राष्ट्रीय औसत से तुलना। SDG–9 पर एक अध्ययन (24) के अनुसार सकल मूल्य वर्धन में विनिर्माण का हिस्सा बिहार में 8.67 प्रतिशत है, जबकि भारत में 14.34 प्रतिशत। विनिर्माण में रोज़गार का हिस्सा बिहार में 5.71 प्रतिशत और भारत में 11.42 प्रतिशत है। यानी बिहार इन दोनों संकेतकों पर राष्ट्रीय औसत का क्रमशः लगभग 60 और 50 प्रतिशत है (लेखक की गणना)। इसी अध्ययन में बिहार का उद्योग–नवाचार–अवसंरचना (SDG–9) स्कोर 53 और भारत का 61 बताया गया है (24)। ये आँकड़े एक द्वितीयक अध्ययन से लिए गए हैं, मूल SDG इंडिया रिपोर्ट से नहीं।

**प्रमुख समस्याएँ एवं चुनौतियाँ**

साहित्य के अनुसार बिहार के विनिर्माण उद्यमियों की समस्याएँ एक–दूसरे से जुड़ी हैं; सबसे अधिक वित्त, प्रशासनिक प्रक्रिया, बिजली व आधारभूत संरचना तथा विपणन का उल्लेख मिलता है (1)(4)।

| समस्या | साक्ष्य | स्रोत |
|---|---|---|
| वित्त तक पहुँच | 450 उद्यमियों के सर्वेक्षण में पहचानी गई बारह बाधाओं में वित्तीय कठिनाइयाँ शामिल; खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों में वित्त प्रमुख बाधा | [1][4] |
| कच्चा माल, बिजली और आधारभूत संरचना | कच्चे माल की उपलब्धता, बिजली की कमी और अपर्याप्त आधारभूत संरचना सूचीबद्ध; बिजली की गुणवत्ता का महत्व उप-क्षेत्र के अनुसार अलग (शीत-भंडारण में अधिक) | [1][4] |
| भूमि | भूमि प्रमुख बाधाओं में गिनी गई | [4] |
| प्रशासनिक प्रक्रिया | बहु-स्तरीय अनुमोदन, औपचारिकताएँ, देरी और बढ़ी हुई लेन-देन लागत; सरकारी व प्रशासनिक समस्याएँ | [1][4] |

| | | |
|---|---|---|
| विपणन और जानकारी की कमी | खराब विपणन, प्रतिस्पर्धा और ज्ञान का अभाव सूचीबद्ध; लेखकों ने ब्रांड-निर्माण व बाज़ार-निर्माण को अधिक उपयोगी उपाय माना | [1][4] |
| श्रम और प्रौद्योगिकी | श्रम की समस्या और कमज़ोर प्रौद्योगिकी सूचीबद्ध | [1] |
| औद्योगिक रुग्णता | 9 जिलों के 450 उद्यमों के अध्ययन में रुग्णता के 27 प्रमुख कारक पहचाने गए | [2] |
| आकार की संरचना | छोटी इकाइयों की प्रधानता और बहुत कम मध्यम इकाइयाँ (missing middle) | [4] |
| नीति-रचना की कमज़ोरी | 2008-2016 के अनुदान ने कम जोखिम उठाने वाले गैर-उद्यमियों को आकर्षित किया, जिनमें से कई प्रतिस्पर्धा में टिक नहीं सके | [4] |

वित्त का प्रश्न। ऋण–जमा अनुपात 2018–19 के 44.09 प्रतिशत से बढ़कर 2025–26 में 60.21 प्रतिशत हुआ (10), जो सुधार दिखाता है। पर यह सभी क्षेत्रों का समग्र अनुपात है। विनिर्माण MSME को मिले ऋण के आँकड़े इस आलेख में उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए केवल इसी आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि विनिर्माण उद्यमियों की वित्तीय समस्या घटी है।

ऋण–मंजूरी में देरी। IIBF की रिपोर्ट के नमूने (100 MSME) में 72 मामलों में ऋण–मंजूरी में दो महीने से अधिक लगे, 11 में एक सप्ताह के भीतर मंजूरी मिली और 17 में ऋण मंजूर ही नहीं हुआ (21)। यानी इस नमूने में केवल 11 प्रतिशत उद्यमियों को ऋण जल्दी मिला। नमूना छोटा है और रिपोर्ट के अनुसार सीमित जिले शामिल हुए, इसलिए इसे पूरे बिहार पर लागू नहीं माना जा सकता। रिपोर्ट के अनुसार बिहार का ऋण–जमा अनुपात उस समय देश में दूसरा सबसे कम था (21); आगे 2025–26 में यह 60.21 प्रतिशत हुआ (10)। दोनों आँकड़े अलग समय के हैं, इसलिए यह सुधार की दिशा भर दिखाते हैं।

नीति से मिली सीख। 2016–2021 की औद्योगिक प्रोत्साहन नीति ने पूँजी अनुदान की जगह ब्याज अनुदान अपनाया, जिसमें बैंकों को मुख्य निगरानीकर्ता बनाया गया (4)। बिहार औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन पैकेज 2025 में स्वीकृत परियोजना लागत पर 30 प्रतिशत पूँजी अनुदान का प्रावधान उल्लिखित है (12)। इसलिए पुराने अनुदान के अनुभव से यह सीख लेना ज़रूरी है कि प्रोत्साहन केवल पैसा बाँटने तक सीमित न रहे, बल्कि सही उद्यमियों तक पहुँचे और टिकाऊ इकाइयाँ बनाए।

## संभावनाएँ और गया जिले का संदर्भ

गया में संभावनाएँ तीन स्तरों पर दिखती हैं: राज्य की प्रोत्साहन नीति, जिले के मौजूदा क्लस्टर और नया समन्वित विनिर्माण क्लस्टर।

नीतिगत समर्थन। बिहार मंत्रिमंडल ने 26 अगस्त 2025 को बिहार औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन पैकेज 2025 को मंजूरी दी। रिपोर्ट के अनुसार इसमें स्वीकृत परियोजना लागत पर 30 प्रतिशत पूँजी अनुदान, पात्र उद्योगों में प्रति कामगार मासिक सहायता और प्रति कर्मचारी ₹20,000 का कौशल–विकास अनुदान जैसे प्रावधान हैं (12)। जुलाई 2026 की एक रिपोर्ट के अनुसार इसकी अवधि 31 दिसंबर 2026 तक, या नई नीति लागू होने तक, बढ़ाई गई है (13)।

गया के मौजूदा क्लस्टर। MSME मंत्रालय के विकास आयुक्त कार्यालय के कौशल–मानचित्रण दस्तावेज़ (मसौदा) में गया के निम्न क्लस्टर दर्ज हैं (18):

| क्लस्टर | श्रेणी | स्रोत में उल्लिखित आवश्यकता |
|---|---|---|
| तिलकुट (खाद्य) | बड़ा | मूल्य-वर्धन और पैकेजिंग |
| अगरबत्ती, कटारी हिल | बड़ा | उत्पाद विविधीकरण, गुणवत्ता नियंत्रण, पैकेजिंग |
| पत्थर-शिल्प | मध्यम | पत्थर-नक्काशी और डिज़ाइन |
| काष्ठ-शिल्प | मध्यम | उन्नत बढ़ईगीरी और फर्नीचर डिज़ाइन |

इनके अलावा दस्तावेज़ में जूता, हस्तशिल्प और हथकरघा जैसे अन्य क्लस्टर भी सूचीबद्ध हैं (18)। चारों क्लस्टरों में गुणवत्ता, डिज़ाइन और पैकेजिंग की आवश्यकता दिखती है, जो विपणन से जुड़ी उसी कमी की ओर संकेत करती है जिसे खंड 5 में बाधा बताया गया है।

क्लस्टरों का आकार (प्रोफ़ाइल के अनुसार)। प्रोफ़ाइल में तिलकुट के लगभग 40 पंजीकृत उद्यम दर्ज हैं, और अपंजीकृत इकाइयाँ इनसे दुगुनी बताई गई हैं; बाज़िरगंज का कांस्य–धातु क्लस्टर लगभग 33 और पत्थरकट्टी का पत्थर–शिल्प क्लस्टर लगभग 30 पंजीकृत इकाइयों का है (26)। अगरबत्ती क्लस्टर में कुल 182 इकाइयाँ हैं, जिनमें 32 पंजीकृत और 150 अपंजीकृत हैं; वार्षिक कारोबार ₹20–30 करोड़ और रोज़गार 3,500–4,000 (प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष) बताया गया है (26)। यानी अगरबत्ती क्लस्टर की लगभग 82 प्रतिशत इकाइयाँ अपंजीकृत हैं (150 ÷ 182, लेखक की गणना)। प्रोफ़ाइल में इस क्लस्टर की मुख्य समस्याएँ नवीनतम तकनीक का ज्ञान, विपणन व बाज़ार–नेटवर्क, बाँस की सींक की ऊँची लागत तथा गुणवत्ता व पैकेजिंग में प्रशिक्षण की कमी दर्ज हैं, और निर्यात–बाज़ार तक पहुँच को 'खोजा जाना बाकी' कहा गया है (26)। ये समस्याएँ वही हैं जो खंड 5 में राज्य–स्तरीय साहित्य से निकली थीं, इसलिए क्लस्टर–आधारित सहायता का सुझाव (खंड 7) सीधे इसी साक्ष्य से जुड़ता है। प्रोफ़ाइल में यह भी लिखा है कि क्लस्टर की व्यवहार्यता पर प्रारंभिक अध्ययन तब तक नहीं हुआ था और निदान–अध्ययन के प्रस्ताव को मंजूरी (₹1 लाख) 20 जून 2012 को मिली थी (26); उसके बाद की प्रगति इस आलेख में सत्यापित नहीं की जा सकी है।

समन्वित विनिर्माण क्लस्टर (IMC), गया। यह परियोजना केंद्र सरकार द्वारा अगस्त 2024 में मंजूर 12 औद्योगिक शहरों में से एक है (17)। NICDC के अनुसार यह डोभी के पास 1,670 एकड़ में है, परियोजना लागत ₹1,339 करोड़, निवेश–क्षमता ₹16,524 करोड़ और रोज़गार–क्षमता 1,09,185 है (14)। इसके लक्षित क्षेत्रों में कृषि व खाद्य प्रसंस्करण, हथकरघा व हस्तशिल्प, फर्नीचर, चमड़ा उत्पाद और निर्माण सामग्री शामिल हैं (14)। इन आँकड़ों को परिणाम नहीं, क्षमता के रूप में पढ़ा जाना चाहिए। विस्तृत विश्लेषण इसी शोधार्थी के दूसरे आलेख में है।

लेखक का निष्कर्ष है कि न्यूनतम 1 एकड़ का भूखंड और ₹1.42 करोड़ प्रति एकड़ की दर (14) सूक्ष्म इकाइयों के लिए अलग भूखंड लेना कठिन बना सकती है; इसलिए साझा शेड या छोटे भूखंडों की व्यवस्था पर विचार होना चाहिए।

खाद्य प्रसंस्करण की संभावना। बिहार में खाद्य प्रसंस्करण को कृषि से मज़बूत पूर्व–संबंध और बड़े पैमाने पर रोज़गार की संभावना के कारण स्वाभाविक अग्रणी क्षेत्र माना गया है (4)। गया का तिलकुट क्लस्टर इसी क्षेत्र में आता है।

तिलकुट और GI टैग। जून 2022 की PTI रिपोर्ट के अनुसार नाबार्ड ने खुरमा, तिलकुट और बालूशाही के लिए उत्पादक–संघों को GI टैग का आवेदन करने में सहायता शुरू की थी; सहायता में संघों का पंजीकरण और बाद में विपणन व ब्रांडिंग शामिल बताई गई (25)। रिपोर्ट इकाइयों या कारीगरों की संख्या नहीं बताती। यह इस आलेख के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है कि GI टैग डिज़ाइन, पैकेजिंग और ब्रांड की उसी कमी को दूर कर सकता है जो खंड 5 में विपणन की बाधा के रूप में दिखी। GI टैग का वर्तमान स्वरूप इस आलेख में सत्यापित नहीं किया जा सका है।

गया की भौगोलिक स्थिति। राज आदि (2025) के अनुसार बिहार में MSME गतिविधि पटना, मुज़फ़्फ़रपुर, भागलपुर और गया में केंद्रित है, जबकि अनेक जिले उपेक्षित हैं (22)। यह गया को राज्य के उन जिलों में रखता है जहाँ उद्यमिता का आधार पहले से कुछ मज़बूत है, पर लेखकों ने यह निष्कर्ष विश्लेषित जिला–आँकड़ों के साथ प्रस्तुत नहीं किया, इसलिए इसे केवल संकेत माना गया है।

## निष्कर्ष एवं नीतिगत सुझाव

बिहार में विनिर्माण उद्यमिता के अवसर बढ़े हैं, पर इनका लाभ तभी टिकाऊ होगा जब बाधाओं का समाधान साथ–साथ हो।

### निष्कर्ष

- द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा 2020–21 के 21.1 प्रतिशत से बढ़कर 2024–25 में 26.8 प्रतिशत हुआ (8), पर पंजीकृत कारख़ाने देश के लगभग 1.3 प्रतिशत ही हैं (7)।
- उद्यमों की संख्या बड़ी है (54.19 लाख) (9), जो छोटे और अपंजीकृत पैमाने की प्रधानता का संकेत देती है; यह निष्कर्ष आँकड़ों के मोटे मिलान पर आधारित है।
- वित्त, प्रशासनिक प्रक्रिया, बिजली, विपणन और कौशल की समस्याएँ आपस में जुड़ी हैं (1)(4)।
- गया में नीतिगत प्रोत्साहन, मौजूदा क्लस्टर और IMC मिलकर ठोस संभावना बनाते हैं, पर IMC अभी निर्माण–पूर्व चरण में है और उसके आँकड़े क्षमता के हैं (14)(16)।

### सुझाव

- प्रक्रिया सरल हो। बहु–स्तरीय अनुमोदन देरी और लेन–देन लागत बढ़ाते हैं (4); समयबद्ध एकल–खिड़की मंजूरी से इसे घटाया जा सकता है।
- क्लस्टर–आधारित सहायता। तिलकुट, अगरबत्ती, पत्थर–शिल्प और काष्ठ–शिल्प में डिज़ाइन, गुणवत्ता, पैकेजिंग और ब्रांड–निर्माण पर साझा सुविधाएँ दी जाएँ (4)(18)।
- IMC में छोटे उद्यमों की जगह। छोटे भूखंड या साझा शेड और स्थानीय आपूर्तिकर्ता–पंजीकरण की व्यवस्था हो।
- ऋण की निगरानी। विनिर्माण डैडम् को जिलावार दिए गए ऋण के आँकड़े प्रकाशित हों, ताकि वित्त की समस्या मापी जा सके।
- कौशल। प्रशिक्षण IMC के लक्षित क्षेत्रों के अनुरूप तय हो।
- सही उद्यमियों तक प्रोत्साहन। पुराने अनुदान का अनुभव (4) बताता है कि केवल पूँजी अनुदान पर्याप्त नहीं; चयन, प्रशिक्षण और निगरानी साथ चले।

### संदर्भ ग्रन्थ सूची


1. प्रकाश, बी., कुमार, आई., और वर्मा, जे. के. (2021). विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में MSME की बाधाएँ और संभावित समाधानः भारत से साक्ष्य. प्रॉब्लम्स एंड पर्सपेक्टिव्स इन मैनेजमेंट, 19(4), 325–337. DOI% https%@@doi-org@10-21511@ppm-19¼4½-2021-26
2. प्रकाश, बी. (2020). बिहार (भारत) के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों में औद्योगिक रुग्णता (डॉक्टरेट शोध–प्रबंध). सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ पंजाब. URL% https%@@kr-cup-edu-in@handle@32116@2772
3. क्या बिहार औद्योगीकृत हो सकता है? (लगभग 2007; लेखक और प्रकाशन–वर्ष स्रोत–पृष्ठ पर अंकित नहीं). SOAS रिसर्च ऑनलाइन. URL: https%@@eprints-soas-ac-uk@17278@1@2007@580@580&chirashree&das&gupta-htm (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)
4. आइडियाज़ फ़ॉर इंडिया. खाद्य प्रसंस्करण उद्योगः बिहार से सबक (IGC के 2017 के अध्ययन पर आधारित). URL: https%@@www-ideasforindia-in@topics@macroeconomics @food&processing &industries&lessons&from&bihar (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

5. पोर्टर, एम. ई. (1998, नवंबर). क्लस्टर और प्रतिस्पर्धा का नया अर्थशास्त्र. हार्वर्ड बिज़नेस रिव्यू. URL% https%@@store-hbr-org@product@clusters&and&the&new&economics&of& competition@98609

6. ओकादा, ए., और सिद्धार्थन, एन. एस. (2007). भारत में औद्योगिक क्लस्टरः चेन्नई और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के ऑटोमोबाइल क्लस्टरों से साक्ष्य (आईडीई डिस्कशन पेपर सं. 103). इंस्टीट्यूट ऑफ़ डेवलपिंग इकोनॉमीज़, जेट्रो. URL% https%@@ideas-repec-org@p@jet@dpaper@dpaper103-html

7. पटना प्रेस (29 दिसंबर 2025). बिहार के पंजीकृत कारख़ानों पर रिपोर्ट (ASI 2023–24 पर आधारित). URL% https%@@patnapress-com@bihar&factories&asi&industrial&growth&ranking@ ¼ns[kk x;k% 30 väwcj 2026½

8. एंजेल वन (5 फ़रवरी 2026). बिहार की अर्थव्यवस्था ₹9.9 लाख करोड़ GSDP के रिकॉर्ड पर, विनिर्माण में उछाल. URL: https%@@www-angelone-in@news@economy@bihar&s& economy& hits&record&9&9&lakh&crore&gsdp&powered&by&manufacturing&surge ¼ns[kk x;k% 30 väwcj 2026½

9. इंडियन मास्टरमाइंड्स (10 अक्टूबर 2026). छोटे कारोबार, बड़ा असरः बिहार में 54 लाख डैडम् और 2 करोड़ रोज़गार. URL% https%@@indianmasterminds-com@news@bihar&msme& registration& jobs&241291@ (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

10. पटना प्रेस (18 मई 2026). बिहार का ऋण–जमा अनुपात पहली बार 60% के पार. URL: https%@@patnapress-com@bihar&records&60&percent&cd&ratio&first&time@ (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

11. प्रेस सूचना ब्यूरो. आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) वार्षिक रिपोर्ट, 2025. URL% https%@@www-pib-gov-in@PressReleasePage-aspÛ\PRID¾2246009&lang¾1&reg¾3 (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

12. दृष्टि IAS (28 अगस्त 2025). बिहार औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन पैकेज 2025. URL% https%@@www-drishtiias-com@state&pcs&current&affairs@bihar&industrial&investment&promotion&package&2025@print&manually (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

13. पटना प्रेस (2 जुलाई 2026). BIIPP 2025 की अवधि–विस्तार पर रिपोर्ट. URL% https%@@patnapress-com@bihar&industrial&investment&promotion&package&biipp& eÛtension&2026@ (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

14. राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास निगम (NICDC). आईएमसी गया, बिहार. URL% https%@@nicdc-in@projects@12&new&projects@imc&gaya&bihar (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

15. बिहार औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकरण (BIADA). बिहार इंटीग्रेटेड मैन्युफैक्चरिंग सिटी गया लिमिटेड (BIMCGL). URL: https%@@biada1-bihar-gov-in@UploadFile@LatestNews@2025@Jun@19&Jun&2025@IMG&ec7e405c&7daa&4cbc&8a8f&07f83213926e-pdf (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

16. लोकसभा, अतारांकित प्रश्न संख्या 3801 (उत्तरः 11 अगस्त 2026), वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय. URL% https%@@sansad-in@getFile@lsapps@loksabhaquestions@anneÛ@ 188@AU3801& QyqyKT-pdf (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

17. प्रेस सूचना ब्यूरो. राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारे (12 नए औद्योगिक शहर). URL% https%@@static-pib-gov-in@WriteReadData@specificdocs@documents@2024@aug@doc2024830383801-pdf (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026); न्यूज़ ऑन एआईआर (28 अगस्त 2024). केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 12 नए ग्रीनफ़ील्ड औद्योगिक स्मार्ट शहरों को मंजूरी दी. URL: https%@@www-newsonair-gov-in@union&cabinet&approves&12&new&greenfield&industrial&smart&cities (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

18. विकास आयुक्त (MSME), भारत सरकार. कौशल–मानचित्रणः गया जिला (मसौदा). URL: https%@@dcmsme-gov-in@dips@Skillþ20Mapping@Bihar@Gaya&files@sheet001-htm (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

19. विकास आयुक्त (MSME), भारत सरकार. उद्यम पंजीकरण आँकड़ों का विश्लेषण, बुलेटिन VII (आकांक्षी जिलों का अनुलग्नक). URL% https%@@dcmsme-gov-in@Buletin&VII&Analysis&of& Udyam&Registration&Data-pdf (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

20- यूथपावर इंडिया. गया, बिहारः जिला पन्ना (20 अक्तूबर 2026 को देखा गया; मूल रजिस्टर का नाम और आँकड़े का वर्ष पोर्टल पर अंकित नहीं). URL% https%@@youthpower-in@district@bihar@gaya

21. सिंह, वी. के., और कुमार, एस. बिहार में MSME वित्तपोषण के मुद्दे और चुनौतियाँ (भारतीय बैंकिंग एवं वित्त संस्थान की शोध–रिपोर्ट; प्रकाशन–वर्ष रिपोर्ट में अंकित नहीं). URL% https%@@www-iibf-org-in@ documents@reseach&report@Dr-þ20Vipulþ20Kþ20Singhþ20final-pdf (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

22. राज, ए., कुमार, ए., श्रीवास्तव, आर., और कुमार, जी. (2025). बिहार के औद्योगिक विकास में MSME की भूमिकाः द्वितीयक आँकड़ों (2000–2023) पर आधारित अनुभवजन्य अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल फ़ॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च (IJFMR), 7(2). URL% https%@@www-ijfmr-com@papers@ 2025@2@41420-pdf (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

23. कुमार, आर. (2018). बिहार में MSMEः अवसर, मुद्दे और चुनौतियाँ. जर्नल ऑफ़ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज़ एंड इनोवेटिव रिसर्च (JETIR), 5(12). URL: https%@@www-jetir-org@papers@JETIR1812C91-pdf (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

24. बिहार में SDG–9 पर अध्ययन (Advancing SDG9 in Bihar% Challenges and Opportunities…( लेखक और पूरा शीर्षक पृष्ठ पर स्पष्ट नहीं; SDG इंडिया रिपोर्ट 2023–24 के आँकड़ों का उपयोग). URL% https%@@theacademic-in@wp&content@uploads@2025@06@92&1-pdf (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

25. पीटीआई (2 जून 2022). नाबार्ड बिहार को खुरमा, तिलकुट और बालूशाही के लिए GI टैग दिलाने में मदद करेगा. पीएसयू वॉच. URL% https%@@psuwatch-com@press&releases@ nabard&to& help&bihar&seek&gi&tag&for&khurma&tilkut&and&balu&shahi (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

26. MSME–डीआई पटना, MSME मंत्रालय, भारत सरकार. गया जिले की संक्षिप्त औद्योगिक प्रोफ़ाइल (आँकड़े 2011–12 तक; BIADA की स्थिति 25.05.2012 तक; प्रकाशन–वर्ष प्रोफ़ाइल में अंकित नहीं). URL% https%@@dcmsme-gov-in@old@dips@Gaya&BIHAR-pdf (देखा गयाः 30 अक्तूबर 2026)

❑❑❑